

सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े	= किसी कार्य के शुरू करते ही मुसीबतें आनी शुरू हो गई।
सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता =	1. सीधेपन से कोई कार्य नहीं होता। 2. बिना कठोरता दिखाये कोई काम नहीं होता।
सीधे का मुँह कुत्ता चाटे	= सरल व्यक्ति को सभी ठग लेते हैं।
सूप बोले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर छेद	= बहुत दुर्गुणों वाला व्यक्ति भी दूसरों के सामान्य दोष निकाले यह तो आश्चर्य की बात है।
सौ सुनार की, एक लुहार की	= हल्के हल्के सौ आघातों के प्रत्युत्तर में शक्तिशाली व्यक्ति का एक ही आघात भारी पड़ता है।
हमाम में सब नंगे	= प्रत्येक व्यक्ति दोषों से भरा है।
हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा आये	= विशेष प्रयत्न किए बिना उत्तम परिणाम मिल जाना।
हवन करते हाथ जले	= दूसरे की भलाई या कोई अच्छा काम करने वाले व्यक्ति पर भी लोग आक्षेप लगाकर पीड़ित करते हैं।
हाथ कंगन को आरसी क्या	= प्रत्यक्ष के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।
हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और	= 1. कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है। 2. कहना कुछ और करना कुछ।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात (तुल. पूत के पाँव.....।)	= होनहार बच्चे के अच्छे लक्षण शुरू में ही दिखाई देने लगते हैं।

3.2 मुहावरे

वे वाक्य या वाक्यांश जिनके शाब्दिक अर्थ भिन्न और विलक्षण होते हैं। अर्थात् जिनके अर्थ लक्षणा या व्यंजना से व्यक्त होते हैं। सामाजिक, व्यावहारिक, वैचारिक आदि सभी दृष्टि से ये प्रसिद्ध मुहावरे भाषा में प्रयुक्त होकर नई अभिव्यंजना देते हैं।

अंगारे उगलना	= जली कटी सुनाना, क्रोधित होना।
अक्ल का दुश्मन	= मूर्ख।
अपना उल्लू सीधा करना	= स्वार्थ सिद्ध करना।